बुद्धिमानों की मूर्खता

ज्ञान की खोज में बारह शिष्य अपने शहर से बाहर निकले.

उनके गुरु सोमायाजुलु तेरहवें थे, उनके अनुसार एक विशेष राज्य में एक निश्चित शहर में बुद्धिमानी पाई जाती थी. वे पूरी दोपहर चले. कड़क सूरज से उनकी नंगी पीठ तपती रही. शाम तक वे गोदावरी नामक एक विशाल नदी के पास पहुंचे. नदी उफान पर थी और उसकी लहरें तट से आकर ज़ोर-ज़ोर से टकरा रही थीं.

सोमायाजुलु ने अपने शिष्यों से कहा: "हमें उस ज्ञान की नगरी तक पहुँचने के लिए इस नदी को पार करना होगा."

पहले शिष्य ने कहा: "गुरूजी, नदी काफी गुस्से में दिखती है, मेरे दादाजी ने एक बार इस नदी को पार किया था. उन्होंने कहा था कि वो नदी बहुत लालची है."

"क्यों क्या हुआ?" दूसरे शिष्य से पूछा. .

"मेरे दादाजी नमक के व्यापारी थे," पहले ने कहा. "वो बहुत सारे गधों को ले जा रहे थे. गधों पर नमक के बोरे लदे थे. पानी, गधों के पीठ तक गहरा था. जब वे दूसरी तरफ पहुंचे तो उन्हें सभी बोरे खाली मिले! नदी इतनी भूखी थी कि उसने सारा नमक खा लिया!"

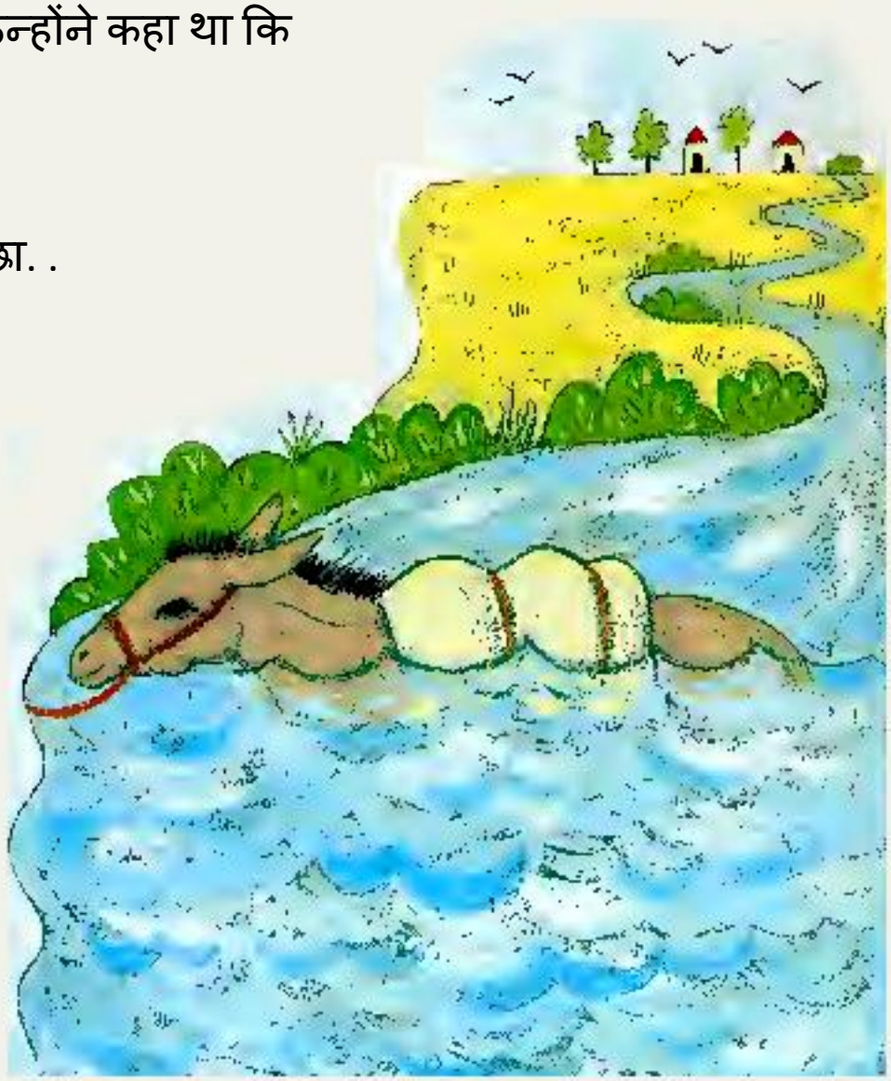

तीसरे शिष्य ने कहा: "हम जो भी करें वो जल्दी करें क्योंकि सूर्य अस्त होने वाला है, और जल्द ही रात हो जाएगी. गुरूजी आप हमें आज्ञा दें."

सोमायाजुलु बहुत गंभीर दिखे. "हम्म," उनका निचला होंठ बाहर की ओर लटका मानो वो कोई महत्वपूर्ण निर्णय लेने जा रहे हों. वे एक पेड़ के नीचे पालथी मारकर बैठे और उन्होंने कहा: "शिष्यों, इस कहानी द्वारा नदी के बारे में चेतावनी को हमें समझना चाहिए. आओ, आज रात हम इसी के किनारे पर बिताएं. सुबह सूरज उगने से पहले, हम इस नदी देखेंगे, जब वो सो रही होगी तब हम उसे पार करेंगे.''

चौथे शिष्य ने पूछा: "हमें यह कैसे पता कि वो नदी अभी जाग रही है?"

कुछ अन्य शिष्यों ने पेड़ से शाखें लेकर आग जलाना शुरू की. सोमायाजुलु ने पांचवें शिष्य से कहा: "एक शाखा को लो और उसे पानी में डालो!"

शिष्य ने उनकी आज्ञा का पालन किया. बाकी लोग देखते रहे. जैसे ही उसने जलती हुई टहनी को पानी में डुबोया वैसे ही "हिस्स" की आवाज़ आई. सभी लोग डर से पीछे हटे. अब उन्हें वाकई में यकीन हुआ कि गोदावरी नदी नाराज थी. उस रात कुछ शिष्य सोए पर कुछ ने गोदावरी के ऊपर नजर रखी.

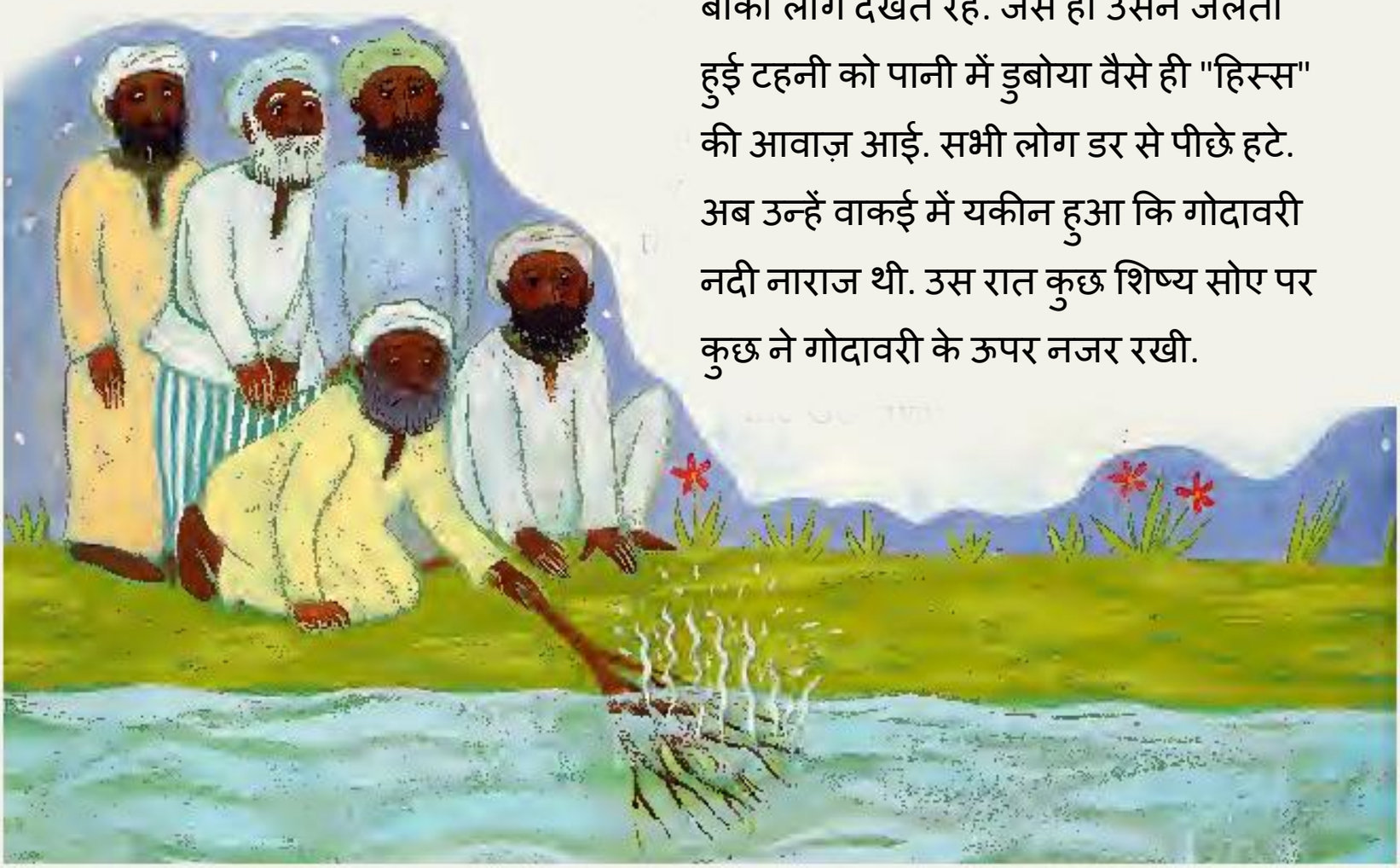

सुबह जब मुर्गे ने बांग दी तो सोमायाजुलु जागा और फुसफुसाया: "मित्रों अब चलो ज्ञान की नगरी की ओर. क्योंकि नदी अभी सो रही है इसलिए हम उसे पार कर पाएंगे."

सभी इच्छुक शिष्य एक साथ चिल्लाए : ''हमारी विजय ज़रूर होगी!''

जैसे ही वे नदी के ढलान वाले किनारे पर पहुंचे, दूसरे शिष्य ने कहा: "गुरुजी, हमें यह कैसे पता कि नदी सो रही है?"

सोमायाजुलु ने एक पेड़ की टहनी तोड़ी और उसे पानी में डुबोया : "ज़रा देखो और विश्वास करो. पर इस बार "हिस्स" की कोई आवाज़ नहीं आई. नदी सो रही है. हमें उसे तुरंत पार कर लेना चाहिए."

गोदावरी जितनी चौड़ी नदी, शिष्यों ने उससे पहले कभी नहीं देखी थी. शुरू में वो उथली थी पर बीच में वो गर्दन जितनी गहरी थी. बारह शिष्यों और सोमायाजुलु ने नदी को चुपचाप पार किया, क्योंकि अगर वो कुछ भी शोर करते तो शायद गोदावरी जाग जाती!

जब वे उस पार पहुँचे, तो सूरज आकाश में तेज़ी से चमक रहा था. गांव के लोग अपनी भैंसों को नदी के पास चराने और नहलाने ले जा रहे थे. धोबियों ने गंदे कपड़ों को काले, बड़े पत्थरों पर पीटना शुरू कर दिया था.

"भाइयों," छठे शिष्य को विश्वासपूर्वक कहा, "क्योंकि अब हम नदी के दूसरे पार पहुँच गए हैं हमें एक बार अपने सभी साथियों को गिन लेना चाहिए." फिर उसने गिनना शुरू किया, "एक, दो, तीन," वो इसी तरह गिनता रहा. उसने खुद को छोड़कर बाकी सभी को गिना. "हम में से अब केवल बारह ही बचे हैं!" वो चिल्लाया. “मनहूस नदी भले ही वह सो रही थी पर उसने हमारे एक भाई को निगल डाला!” जब अन्य शिष्यों ने गिनती की, तो वे भी बारह लोग ही गिन पाए.

फिर वे इतनी जोर से रोए और चिल्लाए कि अंजनेयुलु नाम के एक आदमी को उनकी आवाज़ सुनाई दी. वो अपनी भैंस को नदी में नहलाने ले जा रहा था. जब उसने ज्ञान के तेरह साधकों को रोते-सिसकते और ज़मीन पर लोटते देखा, तो उसने पूछा: "क्या बात है, भाई?" पूरी बात सुनने के बाद उसने कहा: "शायद, मैं आपकी मदद कर सकता हूं."

''आप जो भी मागेंगे वो हम आपको देंगे,'' सोमायाजुलु ने कहा. उन्हें अपनी दौलत पर काफी गर्व था. ''आपको मनचाही कीमत देंगे. पर कृपा आप हमारे भाई को वापस ले आएं!"

"ज़रूर," अंजनेयुलु ने कहा "आपका भाई कुछ ही मिनटों में आपके पास वापस आ जाएगा. आप मेरे निर्देशों का सावधानीपूर्वक पालन करें. गायों के उस झुंड के पास जाएं और वहां उनका गोबर इकट्ठा करें. उस गोबर को यहाँ वापस लाएं जहां मैं खड़ा हूं."

बारह शिष्य और सोमायाजुलु उस आदमी के पास अपनी पैसों की एक बोरी छोड़कर ताजा गोबर इकट्ठा करने के लिए दौड़े. उन्होंने अपनी दोनों हथेलियों में गोबर इकट्ठा किया, भले ही वो बेहद बदबूदार था.

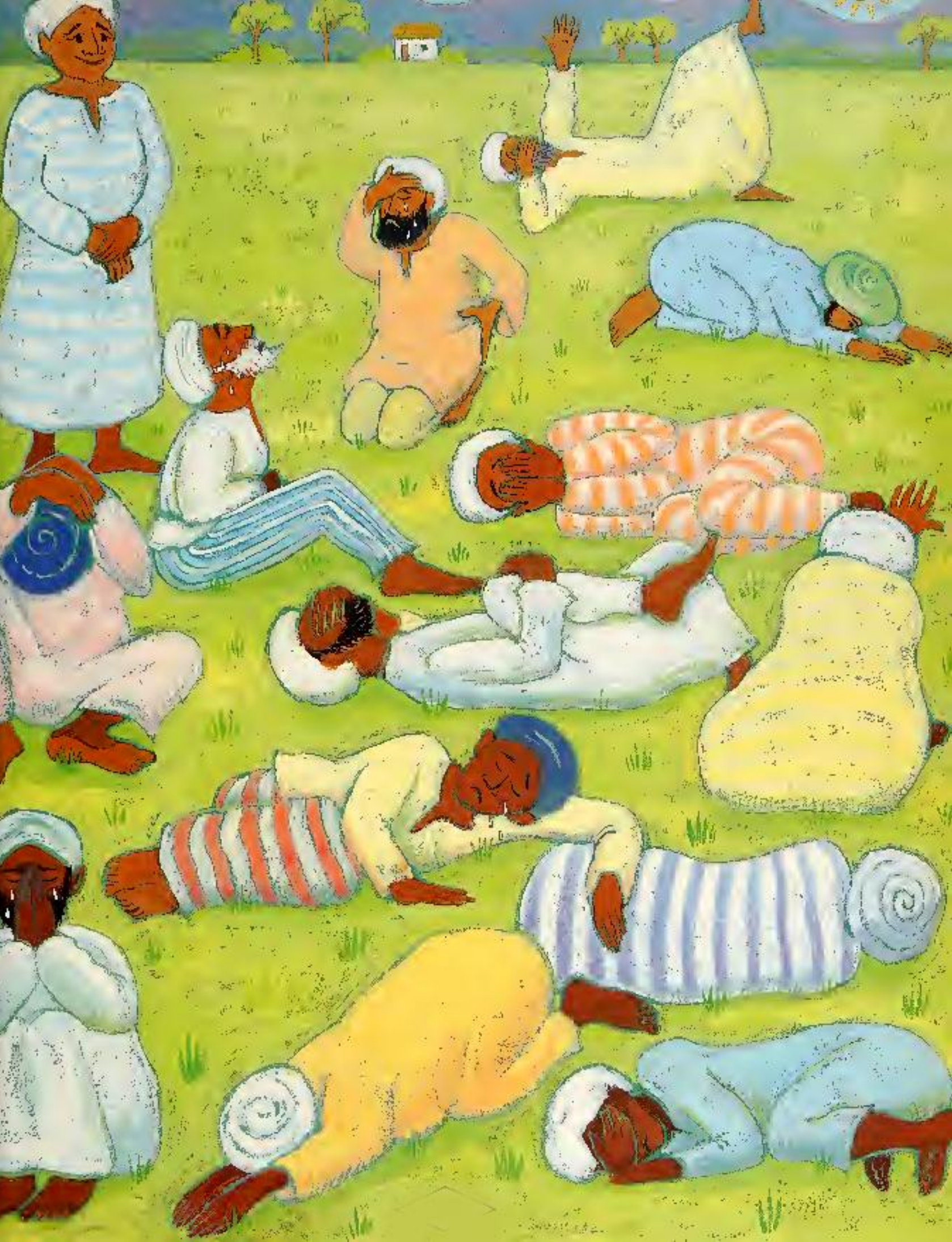

जब वे वापस लौटे, तो अंजनेयुलु ने कहा: "बहुत अच्छा. अब सब अपने-अपने सामने रखे गाय के गोबर को ज़मीन पर चपटा करो."

वो होने के बाद, अंजनेयुलु ने कहा, "अपने-अपने घुटनों के बल टिको और माथे से जमीन से छुओ."

वो होने के बाद अंजनेयुलु ने कहा: "अब गोबर में अपनी नाक धंसाओ."

सभी ने आज्ञाकारी रूप से उसके आदेशों का पालन किया. "अब अपने सिर उठाओ. फिर गोबर में कुल नाक के निशानों की गिनती करो," एक अच्छे शिक्षक की तरह अंजनेयुलु ने कहा.

जब सोमायाजुलु और उनके शिष्यों ने गोबर में नाकों की संख्या की गिनती की, तो उन्हें यह जानकर बेहद खुशी हुई कि वहाँ पर कुल तेरह नाकेँ थीं - बारह नहीं!

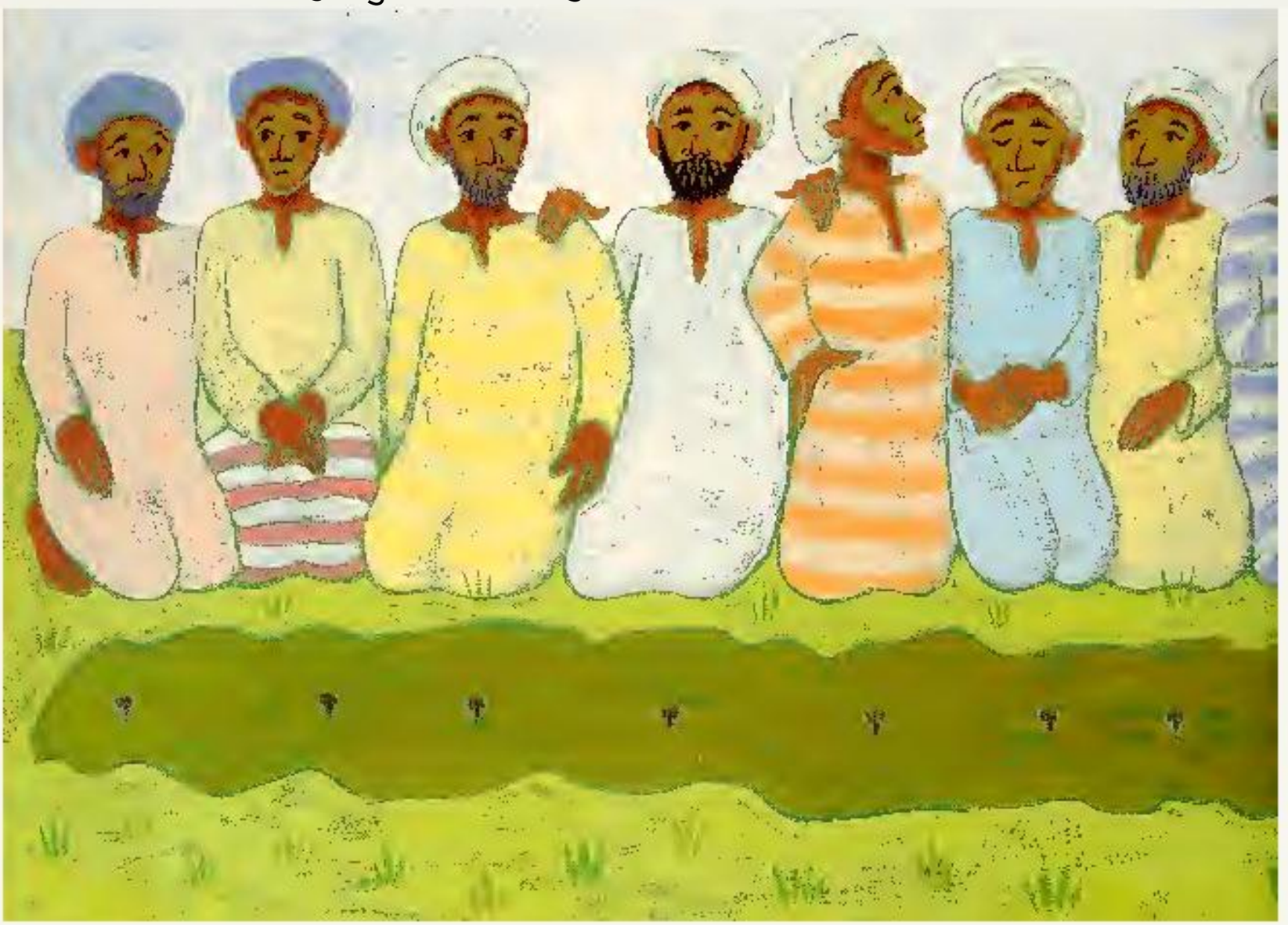

"हमारा लापता भाई अब हमें मिल गया है!" ज्ञान के सभी साधक एक साथ मिलकर चिल्लाए. "हमें पता है कि ज्ञान का शहर बहुत नज़दीक है, और आप जो इतने समझदार हैं, वो ज़रूर उसके द्वारपाल होंगे!"

जब वे बधाई दे रहे थे तब अंजनेयुलु ने खुद को मुश्किल से हंसने से रोका. साधकों ने उसे तमाम सांसारिक उपहार दिए. उसके बाद वो तेरह ज्ञान के पिपासु और अंजनेयुलु अपने अलग-अलग रस्ते गए. सभी को जो कुछ मिला वे उससे काफी संतुष्ट थे. पर उनमें से केवल अंजनेयुलु ही एक ऐसा था जिसके चेहरे पर गाय का गोबर नहीं चिपका था.

समाप्त